

## **Educational Psychology**

Paper III

B.A. II (Hons.)

### **What do you Understand by Mentally Handicapped Children? Discuss the Important Measures of Educating Them.**

मंद बुद्धि बालक उसे कहते हैं जिसकी बौद्धिक योग्यता औसत बालकों से काम होती है। ऐसे बालक के लिए कई प्रकार के पद (terms) उपयोग किये जाते हैं जैसे- मानसिक दुर्बल (mental deficient), मानसिक न्यून (mental retarded), निर्बल बुद्धि (feeble minded), मंद बुद्धि (dull), आदि। लेकिन, पदों के इस हेर-फेर से वस्तु स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

Wakefield, 1967 ने ऐसे बालकों की परिभाषा देते हुए कहा है -

"मानसिक दुर्बलता का तात्पर्य उन स्थितियों के समूह से है, जिसकी विशेषताएं हैं- अपर्याप्त सामाजिक समायोजन, शिक्षण की न्यून क्षमता, परिपक्वता की मंद गति जिसका कारण न्यून बौद्धिक योग्यता है जो जन्मजात होती है अथवा आरम्भ से ही रहती है।"

Ormrod, 1995 ने भी कहा है की -

"मानसिक न्यूनता की विशेषता है औसत से निम्न सामान्य बुद्धि तथा अनुकूली उपयोग का आभाव।"

इन परिभाषाओं में निम्नलिखित बातें मुख्य हैं-

- (i) मंद बुद्धि के बालकों में सामाजिक अभियोजन की क्षमता अपर्याप्त होती है।

- (ii) सीखने की क्षमता न्यून होती है।
- (iii) परिपक्वता की गति मंद होती है।
- (iv) औसत बालकों की तुलना में बुद्धि की मात्रा काम होती है जो जन्म अथवा प्रारंभिक अवस्था से ही पायी जाती है।
- (v) कभी तो सभी लक्षण अलग-अलग और कभी एक ही साथ देखे जाते हैं।

इस परिभाषा से मंद बुद्धि के बालकों का स्वरूप बहुत अंशों में स्पष्ट हो जाता है, फिर भी यह ज्ञात नहीं होता है की ऐसे बालकों की बौद्धिक योग्यता की सीमा आखिर कितनी है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इनकी बुद्धि-लब्धि 85-70 के बीच होती है। इस दृष्टिकोण से **Hollingworth** ने अपनी परिभाषा में कहा है –

**"मंद बुद्धि व्यक्ति वह है जिसकी बुद्धि-लब्धि मूलतः 70% अथवा इससे काम होती है और जो बुद्धि की दृष्टि से न्यूनतम 2% व्यक्तियों से होता है।"**

यहां यह कहना आवश्यक है की इस श्रेणी के बालकों में मानसिक दुर्बल बालकों के साथ-साथ मंद बुद्धि के बच्चों की गणना भी की जाती है। मंद बुद्धि के बच्चों का तात्पर्य ऐसे बच्चों से है, जिनकी बुद्धि-लब्धि 70-85 के बीच होती है। **Gates, Jersild, Mc Connell and Challman, 1964** के अनुसार 75-90 वाले बच्चों को मंद बुद्धि बालक कहते हैं।

## मानसिक दुर्बल या मंद बुद्धि के बालकों की शिक्षा तथा उनका समायोजन:

शिक्षा विशेषज्ञों एवं मनोवैज्ञानिकों ने मंद बुद्धि के बालकों की समुचित-शिक्षा के लिए निम्लिखित प्रयोज्यों की सिफारिश की है-

### **1. उपयुक्त पाठ्यक्रम (suitable syllabus) -**

मंद बुद्धि के बालकों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम का होना बहुत आवश्यक है। कारन यह है की जो पाठ्यक्रम सामान्य बालकों के लिए बनाया जाता है, वह मंद बुद्धि के बालकों के लिए काफी कठिन हो जाता है। अतः अपने पाठ्यक्रम को न समझ पाने के कारन वे शिक्षा के प्रति उदासीन

हो जाते हैं। वर्ग में साथियों के सामने अपनी कमजोरी ज़ाहिर होने पर उनमें लज्जा एवं हीनभाव पैदा होने लगता है, जिसके कारन वे वर्ग से अनुपस्थित रहने लगते हैं, घर पर झूठ बोलते हैं, तथा आवारागर्दी में समय बिताने लगते हैं। **E.H. Marten**, 1965 के अनुसार पाठ्यक्रम में पढ़ने, लिखने तथा हिज्जे की व्यवस्था होनी चाहिए इसके बाद शब्दों के हिज्जे तथा लिखावट साथ-साथ चलना चाहिए।

**Marten** ने विज्ञान के विषयों के बारे में कहा है की ऐसे बालकों को पहले पशुओं तथा पौधों की मौसमी क्रियाओं की शिक्षा प्रदर्शन द्वारा दी जानी चाहिए। इसी तरह अन्य घरेलु भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान के सम्बन्ध में बालकों को सिखाना चाहिए।

## 2. विशिष्ट वर्ग (special class) -

उपर्युक्त कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे बालकों के लिए अलग एक विशिष्ट वर्ग की सिफारिश की है। अमेरिका तथा रूस में इस प्रकार की व्यवस्था उपयोग में आ चुकी है और इसके संतोषजनक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। इस व्यवस्था से बालकों को कई तरह से लाभ पहुँच सकते हैं।

- i) उनकी योग्यता के अनुसार पाठ्यकरण बनाने एवं वर्ग में लागू करने में सुविधा होगी, क्योंकि वर्ग के सभी बालक सामान बौद्धिक स्तर के होंगे।
- ii) बालकों पर व्यक्तिक रूप से ध्यान देना आसान होगा।
- iii) बालकों की योग्यता एवं अभिरुचि के अनुकूल विशेष अध्यापन-विधि का उपयोग करना संभव हो सकेगा।
- iv) बालक हीनता की भावना से बच सकेंगे।

## 3. उपयुक्त अध्यापन-विधि (suitable teaching method) -

मंद बुद्धि के बालकों की समुचित शिक्षा के लिए उचित अध्यापन-विधि भी नितांत आवश्यक है। इस सम्बन्ध में किये गए अध्ययनों से ज्ञात होता है की ऐसे बालक प्रयत्न तथा भूल द्वारा अधिक सीखते हैं। समझ कर सीखने की अपेक्षा रट कर सीखना अधिक पसंद करते हैं। अतः शिक्षकों को चाहिए की वे ऐसे बालकों को पढ़ाते या सिखाते समय इन सारी बातों का उपयोग करें (**Reilley and Lewis**, 1983).

## 4. पाठ्येतर क्रिया (extra-curricular activity) -

मंद बुद्धि के बालकों के शिक्षा-कार्यक्रम में मनोरंजन की व्यवस्था भी ज़रूरी है। अतः किस्सा-कहानी, नाटक तथा लय-युक्त (rhythmical) अन्य क्रियाओं का प्रबंध होना चाहिए। बालकों की अभिरुचि तथा मनोवृत्ति को भी ध्यान में रखना चाहिए। अनुकूल खेल-कूद का सुन्दर प्रबंध भी लाभप्रद सिद्ध होता है।

### **5. चरित्र निर्माण (building up character) -**

यूँ तो सभी स्तर के बालकों के चरित्र का निर्माण आवश्यक है, लेकिन मानसिक दुर्बल बालकों के लिए खास तौर पर इसकी व्यवस्था उनके शिक्षा-कार्यक्रम में होना ज़रूरी है। वास्तव में ऐसे बालकों की शिक्षा का उद्देश्य उन्हें किसी उपयुक्त व्यवसाय के योग्य बनाना है जिससे वे अपनी जीविका चला सकें। **Kolstoe** ने इस बात पर ज़ोर दिया है की शिक्षकों को चाहिए की वे ऐसे बालकों में इन शील गुणों को विकसित करें। इसी तरह **Kirk and Johnson** ने बताया है की बालकों की शिक्षा-कार्यक्रम में उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को यथासंभव बढ़ने की व्यवस्था होनी चाहिए।

### **6. विशिष्ट निवासिय स्कूल (special residential school) -**

**Berri** महोदय ने मंद-बुद्धि के बालकों की समुचित शिक्षा के लिए विशिष्ट निवासिय स्कूल की सिफारिश की है। **E.H. Marten** (1965), **Heward and Orlansky** (1980), आदि ने भी इस व्यवस्था का समर्थन किया है तथा बताया है की इससे मंद बुद्धि के बालक कई अर्थों में लाभान्वित हो सकेंगे-

- i) अलग व्यवस्था होने से उनकी योग्यता के अनुकूल विशेष पाठ्यक्रम बनाने, उपयुक्त अद्यापन-विधि से शिक्षा देने तथा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य अनुकूल क्रियाओं की व्यवस्था करने में काफी सुविधा होगी।
- ii) शिक्षकों के लिए यह संभव हो सकेगा की वे विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दें सके। इस तरह शिक्षा के साथ-साथ बालकों के व्यक्तिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक समायोजन की ओर भी ध्यान दिया जा सकेगा।

### **7. व्यवहार परिमार्जन (behaviour modification) -**

मानसिक दुर्बल अथवा मंद बुद्धि के बालकों के समायोजन तथा शिक्षा को यथासंभव सफल बनाने के लिए उनके व्यवहार का परिमार्जन आवश्यक है। **Katzdin**, 1978 ने अपने अध्ययन में पाया की जब मंद बुद्धि के बालकों में व्यवहार-परिमार्जन के माध्यम से अपेक्षित कौशलों को

विकसित करने में सुविधा हुयी। अतः व्यवहार-परिमार्जन प्रविधि की सहायता से शिक्षकों तथा माता-पिता को चाहिए की बालकों में उनकी योग्यता के अनुकूल कौशल को विकसित करे।

इस प्रकार, उपर्युक्त शिक्षा-कार्यक्रम को कार्यान्वित कर के मंद बुद्धि के बालकों को एक बड़ी हद तक सफलतापूर्वक शिक्षित एवं समायोजित बनाया जा सकता है।

**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com